"जनपद झाँसी के उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके सामाजिक आर्थिक प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन"

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय की
एम.एड. की उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत

लघु शोध प्रबन्ध

सत्र : 2009 – 10

शोध निर्देशक
डा0 अरिमर्दन सिंह
एसोसियेट प्रोफेसर
शिक्षक शिक्षा विभाग

शोधकर्त्री
प्रीति तिवारी
एम0एस0सी0(वनस्पति विज्ञान),
एम.एड.(छात्रा)

शोध केन्द्र
अतर्रा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अतर्रा (बाँदा)

घोषणा-पत्र

मैं प्रीति तिवारी यह घोषणा करती हूँ कि मेरा शोध कार्य जिसका विषय **''जनपद झाँसी के उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके सामाजिक आर्थिक प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन''** है। जो पूर्णतः मौलिक है । मेरी पूर्ण जानकारी और विश्वास के अनुसार इस विषय पर शोध कार्य अन्यत्र कहीं भी किसी अन्य के द्वारा प्रस्तुत नहीं किया गया है।

मेरी कामना है कि ईश्वरी कृपा से, पूज्य गुरूजनों एवं श्रद्धेयजनों के स्नेहिल आशीर्वाद से यह प्रयास सफल सिद्ध हो ।

दिनांक : 8/9/10

शोधकर्त्री

Preeti Tiwari

प्रीति तिवारी

एम.एड. छात्रा

शोध निर्देशक प्रमाण-पत्र

डॉ0 अरिर्मदन सिह
ऐसासिएट प्रोफेसर
शिक्षक शिक्षा विभाग

शिक्षक शिक्षा विभाग
अतर्रा स्नातकोत्तर महाविद्यालय
अतर्रा (बांदा)

प्रमाणित किया जाता है कि लघु शोध प्रबन्ध **''जनपद झाँसी के उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके सामाजिक, आर्थिक स्तर के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन''** पर शोध कार्य **प्रीति तिवारी** एम0एड0 छात्रा ने मेरे निर्देशन में पूर्ण किया है। यह इनका मौलिक प्रयास है तथा इनकी विषय सामग्री का किसी भी रूप में अन्य परीक्षा के लिये प्रयुक्त नहीं किया गया है।

दिनांक : 8/9/10

हस्ताक्षर

डॉ0 अरिर्मदन सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर
शिक्षक शिक्षा विभाग

आभार

"जनपद झाँसी के उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके सामाजिक, आर्थिक स्तर के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन" शीर्षक पर लघु शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करने में अप्रतिम प्रेरणा परामर्श, सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करने के लिये मैं अपने पर्यवेक्षक **शिक्षाविद् डा0 अरिमर्दन सिंह** के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ ।

आपके द्वारा समय–समय पर दिये गये स्नेह व प्रभावपूर्ण दिशानिर्देश, सुझाव एवं सहयोग के कारण ही मेरा शोधप्रबन्ध समय से पूरा हो सका । मैं आपके वात्सल्यमयी एवं स्नेही सहयोग, जो अविस्वमरणीय एवं अनुकरणीय है, के लिंए हृदय के लिए आभारी हूँ व सदैव रहूंगी ।

मैं अपनी विभागाध्यक्ष डा0 उषा कक्कड़ का जिनके व्यवहारिक सहयोग ने इस कार्य को समय पर पूरा करने के लिए प्रेरित किया तथा महाविद्यालय स्तर पर शोध कार्य हेतु जो भी साधन उपलब्ध है वे सभी साधन मुझे आपके सहयोग से बिना किसी रूकावट के मिलते रहे । अतः मैं आपका भी हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ ।

मै अपने विद्यालय के शिक्षा विभाग के सम्मानीय एवं विद्वान प्रवक्तागणों को भी सहृदयता से कृतज्ञता प्रकट करती हूँ ।

अन्त में अपने पिताश्री महेश कुमार तिवारी एवं माता श्रीमती ममता तिवारी व भाई प्रियेश तिवारी एवं बहिन पूर्ति तिवारी तथा परिवार के अन्य सदस्यों एवं मित्रों रूचि जैन, रश्मि जैन, कीर्ति सागर, योगेश सेन तथा राकेश कुमार अग्रवाल की विशेष आभारी हूँ ।

इस शोध कार्य को पूरा करने में जिन पुस्तकों एवं शोध ग्रन्थों से मदद मिली है उन सबके लेखकों के प्रति भी मैं अपना आभार व्यक्त करती हूँ ।

Preeti Tiwari

दिनांक : 8|9|10 **प्रीति तिवारी**

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय 01–08

प्रस्तावना
समस्या की आवश्यकता
समस्या का कथन
समस्या में प्रयुक्त शब्दों की ब्याख्या
अध्याय का उद्देश्य
समस्या के शोध का महत्व
अध्ययन की परिकल्पना
अध्ययन के चर
अध्ययन का सीमांकन

द्वितीय अध्याय 09–20

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण
सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण का महत्व
समस्या से सम्बन्धित क्षेत्र में हुये कुछ प्रमुख अध्ययन
(अ). विदेशों में किये गए अध्ययन
(ब) भारत में किये गए अध्ययन

तृतीय अध्याय 21–32

अनुसंधान की विधि तथा प्रविधि
न्यादर्श
विद्यालय का चयन
छात्र कक्षा का चयन
छात्र संख्या का चयन
अनुसंधान हेतु उपकरणों का चयन
अनुसंधान में प्रर्युक्त परीक्षण का विवरण
सामाजिक–आर्थिक मापनी
परीक्षण का प्रशासन
प्रदत्तों का संकलन
सांख्यिकीय प्रशिक्षण प्रयोग

चतुर्थ अध्याय 33–38

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

पंचम अध्याय 39–41

निष्कर्ष एवं सुझाव
संदर्भ ग्रन्थ सूची

परिशिष्ट 42–44
उपकरण 45–47

प्रथम अध्याय

भूमिका

अध्याय – 1

प्रस्तावना :

"प्रथम नार्जिता विद्या, द्वितीय नार्जित धनम्, तृतीय नार्जितम् पुण्यम्, चतुर्थ किम करष्यते।

अर्थात् जीवन के प्रथम भाग में विद्या नहीं प्राप्त की, द्वितीय भाग में धनोपार्जन नहीं किया, तृतीय भाग में पुण्य नहीं कमाया तो चौथे में क्या करेगा।

मनुष्य परिस्थितियों का दास होता है। वह अपनी परिस्थितियों से नित्य समायोजन करने का प्रयास करता है। परिस्थितियों पर विजय प्राप्त प्राप्त करना मानव जीवन की सफलता है। इस कथन पर सूक्ष्म दृष्टि से विचार करने पर यह ज्ञात होता है कि मानव जीवन की परिस्थितियां मनुष्य के वातावरण एवं व्यक्तित्व के विकास दोनों को ही प्रभावित करती हैं। किसी व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक विकास सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों पर ही निर्भर करता है।

व्यक्ति का पूर्ण विकास तभी संभव है जब प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता अनुसार विकास करने का उचित अवसर प्राप्त हो। यद्यपि यह अकाट्य सत्य है कि प्रत्येक व्यक्ति को एक समान विकसित नहीं किया जा सकता है क्योंकि आज वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि व्यक्ति के जन्म के मूल से ही वैयक्तित्व भिन्नता पायी जाती है अतः कोई भी दो व्यक्ति के जन्म शारीरिक एवं मानसिक रूप से एक समान नहीं हैं। प्रत्येक बालक में कुछ जन्मजात अन्तर्निहित शक्तियां होती हैं। जिनका उचित एवं अनुचित विकास उन्हें प्रदान किये गये उपयुक्त एवं अनुपयुक्त पर्यावरण पर निर्भर करता है।

बालक के व्यक्तिगत भेद एवं वातावरण का प्रभाव उसके शैक्षिक उपलब्धि पर भी परिलक्षित होता है। इस सम्बन्ध में चार्ल्स सेंगल ने अपनी पुस्तक "बैकबर्ड चिल्ड्रेन इन मैकिंग" में लिखा है कि –

"आधुनिक समाज में व्यक्ति की प्रतिष्ठा और सम्मान का आधर उसका सामाजिक आर्थिक स्तर ही होता है।"

रेमार्ट ने लिखा है –

"दो बालक एक ही स्कूल में भले ही पढ़ते हो एक ही प्रकार से शिक्षकों से प्रभावित हों और एक साथ ही अध्ययन करते हों फिर भी सामान्य ज्ञान, रूचियों भाषा, व्यवहार तथा नैतिकता में अपने अलग–अलग पारिवारिक वातावरण के कारण जहां से आते हैं, भिन्न–भिन्न दिखायी पढ़ते हैं।

समस्या की आवश्यकता :

सामाजिक एवं आर्थिक पारिस्थितियों का छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर किस सीमा तक प्रभाव पड़ता है। यह एक समस्या है।

इस समस्या के कारणों को जानने की जिज्ञासा शिक्षार्थी के मन में जाग्रत हुयी है। जानने की इच्छा के फलस्वरूप वह इस पर सोचने के लिये विवश है क्योंकि –

दैनिक जीवन में ऐसे उदाहरण प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से आते रहते हैं।

अतः प्रस्तुत समस्या के समाधान हेतु शोधार्थी ने छात्रों के सामाजिक–आर्थिक स्तर तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में तुलनात्मक दृष्टि से अध्ययन करने का प्रयास किया है।

समस्या का कथन :

प्रस्तुत अनुसंधान में छात्रों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से क्या सम्बन्ध है, इस विषय में तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। अतः शोध कार्य का शीर्षक है –

"जनपद झाँसी के माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके सामाजिक आर्थिक स्तर के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन"

समस्या में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या:

प्रस्तुत समस्या के अन्तर्गत छात्रों का सामाजिक–आर्थिक स्तर तथा उनकी शैक्षिक निष्पत्ति के सम्बन्ध में ही अध्ययन करना मुख्य विषय है। अतः सामाजिक–आर्थिक

स्तर एवं शैक्षिक निष्पत्ति के अर्थ को यहां स्पष्ट किया जायेगा।

सामाजिक आर्थिक स्तर :

बालक का जन्म से ही समाज से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। बालक का व्यक्तित्व उसके अपने चारों ओर के वातावरण से प्रभावित होता रहता है, जो उसकी शैक्षिक गतिविधियों एवं समस्याओं को प्रभावित करता रहता है। किसी भी व्यक्ति का सामाजिक एवं आर्थिक स्तर उसके द्वारा अर्जित आय, शिक्षा एवं उसके व्यवसाय से आंका जाता है। भारतीय परिस्थितियों में व्यक्ति की जाति उसके परिवार के आकार का भी महत्व है।

एक सामान्य परिभाषा में सामाजिक–आर्थिक स्तर का अर्थ व्यक्ति के सामाजिक समूह की स्थिति को निर्देशित करता है।

बैल्थमैन के अनुसार :

"सामाजिक–आर्थिक स्थिति बालक के वातावरण का एक भाग है जिसका प्रभाव अन्य कारकों की अपेक्षा अधिक विस्तृत रूप में पड़ता है।

मुख्यतः यह स्तर पिता की शिक्षा, आय, व्यवसाय, सम्पत्ति एवं परिवार के सांस्कृतिक स्तर को व्यक्त करता है।"

ली. विचार के अनुसार :

"एक बच्चे या उसके घर या सामाजिक–आर्थिक स्थितियों से परे वैज्ञानिक रूप से अधिक क्रमानुसार अध्ययन नहीं किया जा सकता है। जैसा कि एक जानवर या पौधे का स्वभाव रहन–सहन से अलग अध्ययन। वास्तव में एक बालक का सम्बन्ध उसके पर्यावरण के साथ बहुत जटिल होता है।"

कैप्टिन के अनुसार :

"वह स्थिति जिसे एक परिवार का सदस्य सांस्कृतिक अधिकारों से प्रचलित औसत स्तर या सामुदाय की सामूहिक प्रक्रियाओं में भाग लेने के सन्दर्भ में प्राप्त होता है। वहीं उसकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति है।

मैकाइवर एवं आर.एम. चाले के अनुसार :

"स्तर से तात्पर्य है– व्यक्ति की सामाजिक स्थिति जैसे– आय, व्यवसाय एवं शिक्षा, प्रतिष्ठा प्रभाव जिसे समाज में वह अर्जित करता है।"

एच.एच. हार्ने के अनुसार :

"व्यक्तियों की विचारधाराऐं ही मुख्य रूप से सामाजिक स्तर को निर्धारित करती हैं। प्रत्येक व्यक्ति का सामाजिक–आर्थिक स्तर वहां के विशेष समूह द्वारा निर्धारित किया जाता है।"

टरमैन एवं मैरिल के अनुसार –

"जो बालक उच्च व्यवसाय वाले माता–पिता की सन्तान होते हैं उनकी बुद्धि एवं ज्ञानोपार्जन की शक्ति, लिपिक आदि पेशे वाले समूह के बालकों से उच्च होती है।"

लैपियर के अनुसार :

"सामाजिक स्थिति साधारणतया व्यक्ति का समाज में स्थान के रूप में परिलक्षित होता है।"

यंग के अनुसार :

"सामाजिक स्थिति, प्रत्येक समाज एवं प्रत्येक समूह में प्रत्येक सदस्य के कुछ कार्य एवं क्रियाएं होती हैं और जो शक्ति एवं प्रतिष्ठा की कुल मात्रा द्वारा हम उसकी स्थिति का संकेत करते हैं।"

शैक्षिक उपलब्धि:

प्रत्येक कार्य का कुछ न कुछ परिणाम अवश्य होता है। छात्रों का मूल्यांकन वर्ष भर की परीक्षाओं के माध्यम से किया जाता है। तथा परीक्षा में जो अंक छात्र प्राप्त करते हैं उसे शैक्षिक उपलब्धि कहा जाता है। प्रत्येक वस्तु का मूल्यांकन होता है। पदार्थों को हम ग्राम, लीटर तथा मीटर आदि से नाप लेते हैं। किन्तु योग्यता का मूल्यांकन करने

के लिये हमें परीक्षण से प्राप्त अंकों की ओर देखना पड़ता है। जैसे कि थार्नहाइक ने कहा है कि –

"जिस वस्तु का भी अस्तित्व है उसका किसी न किसी मात्रा में भी अस्तित्व है और कुछ भी किसी मात्रा में उपस्थित है – उसे मापा जा सकता है।"

साधारण रूप से उपलब्धि का अर्थ किसी निश्चित कार्यक्षेत्र में अर्जित किये गये ज्ञान का मापन करना है। इसके अन्तर्गत यह देखा जाता है कि अपनी बुद्धि के अनुसार विद्यार्थी किसी विषय का कहां तक अध्ययन कर सकता है।

बकिंघन ने सम्प्राप्ति को वह माप माना है कि जिसके द्वारा विद्यालय के अन्दर और बाहर प्राप्त ज्ञान को प्रशिक्षण के समय तथा प्रकृति के अनुसार देखा जाता है।

एन0 एनेस्टेसी के अनुसार :

संक्रियात्मक रूप से निष्पत्ति की परिभाषा इस प्रकार की जा सकती है –

"शैक्षिक योग्यता, विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त सफलता के उस स्तर का अध्यापकों द्वारा किया गया वह मूल्यांकन है जो विद्यार्थी शैक्षिक निर्देशों के समझने के प्रयत्न में और उसे पुनः अभिव्यक्त करने के साथ ही उसके स्तर या आयु के अनुसार निर्धारित पाठ्यक्रम के लक्ष्य को प्राप्त करने से अभिव्यक्त होता है और जिसका प्रभाव उसकी त्रैमासिक उसकी त्रैमासिक परीक्षा में उसके द्वारा किये गये कार्यो से मिलता है।"

टायलर के अनुसार :

"अधिक व विशिष्ट रूप से यह कहा जा सकता है कि शैक्षिक परीक्षण में विद्यार्थियों द्वारा अंकों का समग्र योगा होता है।"

क्रीमैन के अनुसार :

"एक शैक्षिक निष्पत्ति वह है, जिसका निर्माण ज्ञान समूह में कौशल मापन के लिये किया जाता है।"

उद्देश्य :-

1. माध्यमिक स्तर के छात्रों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।
2. माध्यमिक स्तर की छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।
3. माध्यमिक स्तर के छात्र/छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।

समस्या के शोध का महत्व :

यद्यपि भारत एक विशाल देश है। विभिन्न क्षेत्रों में इसने प्रशंसनीय कदम उठाये हैं। तथापि स्वतंत्रता प्राप्ति के इतने वर्षों बाद भी भारत आज विश्व का सर्वाधिक निर्धन देश है। अभी भी यहां पौष्टिक भोजन, वस्त्र, औषधि का अभाव है जिसके फलस्वरूप अधिकांश शिशु जीवन ग्रहण करने से पूर्व ही अपनी जीवन लीला समाप्त कर लेते हैं। जनता का अत्यन्त न्यून भाग ही सामाजिक आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न है। सामाजिक तथा आर्थक दृष्टि से सम्पन्न परिवार के बालकों को अपना शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक विकास करने का समुचित अवसर उपलब्ध होता है। इसके विपरीत निर्धन परिवार के बालकों को इस प्रकार के कोई साधन नहीं प्राप्त होते हैं। फलतः उनके विकास का क्रम अवरूद्ध हो जाता है। प्रभावित होते हुए भी यह निर्धन छात्र आवश्यक शैक्षिक सामग्री के अभाव में शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रह जाते हैं। क्योंकि शिक्षा की अपेक्षा उनके सम्मुख जीवन–यापन की समस्या प्रमुख होती है। आज भी भारत में ऐसे परिवार हैं जहां तक शिक्षा का कोई प्रयास नहीं पहुंच पाया है।

आधुनिक शिक्षाशास्त्रियों तथा मनोवैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि शैक्षिक अनुकूलन बहुत कुछ छात्र के सामाजिक–आर्थिक स्तर पर निर्भर करता है। यदि छात्र आर्थिक दृष्टि से विपन्न है तो वह अध्ययन सामग्री के अभाव में शैक्षिक उपलब्धि में भी पिछड़ जाता है। क्योंकि जब बालक को खाने के लिये भोजन, पहनने के लिये वस्त्र,

रहने के लिये घर अध्ययन के लिये स्वच्छ वातावरण नहीं प्राप्त होता है तथा उसका शारीरिक तथा मानसिक विकास समुचित रूप से कैसे सम्भव है। ऐसी स्थिति में शैक्षिक उपलब्धि में भी वह उन क्षेत्रों से कम अंक प्राप्त करता है। जिनको सभी सुख सुविधायें प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं।

प्रस्तुत शोध कार्य शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक पर्यावरण सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के प्रभाव की स्पष्ट रूप से व्याख्या करता है। अर्थात् सामाजिक, आर्थिक स्तर शैक्षिक निष्पत्ति को किस प्रकार प्रभावित करता है। इसका विश्लेषण करता है। वास्तव में यह अध्ययन हमें बताता है कि माता–पिता की शिक्षा, परिवार के सदस्य, पारिवारिक सुविधायें सामाजिक स्तर एवं शिक्षा के प्रति माता–पिता का दृष्टिकोंण आदि कारण बालकों को शैक्षिक समाप्ति को किस सीमा तक प्रभावित करते हैं।

भारत की वर्तमान शिक्षा पद्धति में वार्षिक परीक्षा के आधार पर ही छात्रों में उपलब्धियों का मूल्यांकन किया जाता है। प्रमुखतः उत्तीर्ण छात्रों को तीन श्रेणियों में विभक्त किया जाता है। कुछ छात्र प्रथम श्रेणी में आते हैं जिनके अंक अधिक हैं और इसी प्रकार कुछ द्वितीय व तृतीय श्रेणी पर आते हैं। (अंकों के आधार पर) श्रेणियों के विभाजन का अपना मापदण्ड है। शेष छात्र अनुत्तीर्ण हो जाते हैं। अध्यापक के जीवन में यह प्रश्न बार–बार उत्पन्न होता है कि किस प्रकार का भेदभाव शिक्षा में समान अवसर के लोकतान्त्रिक सिद्धान्त के विपरीत है। वास्तव में बुद्धि तथा जन्मजात शक्तियां प्रतिभा और प्रगति की गति में भिन्नता से इस प्रकार के भेद–भाव उत्पन्न होते हैं। यद्यपि ये ही विद्यालयी सफलता तथा परिवार का शैक्षिक एवं सामाजिक –आर्थिक पर्यावरण भी छात्रों की सामूहिक परीक्षा में प्राप्त श्रेणी का निर्धारण करने में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान करता है। यदि विद्यालयी प्रगति को प्रभावित करने वाले पर्यावरण सम्बन्धी सामाजिक आर्थिक घटकों को जन्मजात योग्यता, कक्षा शिक्षण के ढंग, परीक्षा पद्धति के दोषों से अलग करने में सफलता प्राप्त कर ली जाती है तो छात्रों को अधिकतम शैक्षिक उपलब्धि के विकास की दिशा में नवीन मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है।

प्रस्तुत समस्याओं को ध्यान में रखते हुए छात्रों की आवश्यकताओं का पता लगाकर यथानुकूल आर्थिक एवं विद्यालय में भन्य शैक्षिक सहायता देकर छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में वांक्षित योग किया जा सकता है।

उपयुक्त सीमाओं को ध्यान में रखकर शोधकर्त्री ने समस्या का वास्तविक और निष्पक्ष अध्ययन करने का प्रयास किया है।

अध्ययन की परिकल्पना :–

1. माध्यमिक स्तर के छात्रों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. माध्यमिक स्तर की छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
3. माध्यमिक स्तर के छात्र/छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

अध्ययन के चर :–

स्वतंत्र चर :– सामाजिक आर्थिक स्तर

आश्रित चर :– शैक्षिक उपलब्धि

अध्ययन का सीमांकन :–

समय एवं साधन को दृष्टिगत रखते हुये प्रस्तुत समस्या के अध्ययन की कुछ सीमायें निम्नलिखित हैं –

1. प्रस्तुत अध्ययन बुन्देलखण्ड क्षेत्र के झांसी जिले के बरूआसागर के छात्र–छात्राओं पर ही किया गया।
2. न्यादर्श में माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं को लिया गया।
3. न्यादर्श केवल 100 छात्र–छात्राओं का ही लिया गया।
4. कक्षा से सम्बन्धित सभी विषयों पर सम्मिलित रूप से कोई निष्पत्ति परीक्षण उपलब्ध न होने के कारण इन्हीं छात्र–छात्राओं की पूर्व वार्षिक परीक्षा के प्राप्तांकों को शैक्षिक निष्पत्ति के रूप में लिया गया।

द्वितीय अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

अध्याय – 2

सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण का महत्व :

सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के महत्व को स्पष्ट करते हुए "गुड़ बार तथा स्केट्स" ने लिखा है कि –

"एक कुशल चिकित्सक के लिये यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि सम्बन्धी आधुनिक खोजों से परिचित होता रहे। इसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र अनुसन्धान के क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुसन्धानकर्त्री के लिए भी उस क्षेत्र से सम्बन्धित सूचनाओं एवं खोजों से परिचित होना आवश्यक है।"

समस्या से सम्बन्धित क्षेत्र में हुए कुछ प्रमुख अध्ययन :–

प्रस्तुत समस्या के सम्बन्ध में विगत 50–55 वर्षों में भारत, अमेरिका तथा ब्रिटेन में अनेक अध्ययन किए गए हैं। उन सभी अध्ययनों को देखने से ज्ञात होता है कि बालकों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि तथा शारीरकि, मानसिक विकास पर पर्याप्त रूपसे पड़ता है। यहां प्रस्तुत अध्ययन में उन सभी का उल्लेख करना असम्भव है।

अतः शोधकर्त्री ने केवल अध्ययनों को प्रस्तुत किया है। जिनका समस्या से घनिष्ठ सम्बन्ध है।

(अ) विदेशों में किया गया अध्ययन :

सी0सेगल ने प्रस्तुत समस्या से सम्बन्धित अध्ययन सन् 1947 में किया था। मुख्यतः यह शोधकार्य पिछड़े हुए परिवार के 27 बालकों पर ही किया गया है। शोधकर्त्री ने "बने बुद्धि परीक्षण" द्वारा इन बालकों के बौद्धिक स्तर को ज्ञात करने पारिवारिक स्थिति, संख्या तथा व्यवसाय के आधार पर उनमें सामाजिक आर्थिक स्तर की माप की तथा यह निष्कर्ष निकाला कि बालकों के शैक्षिक स्तर तथा उनके पारिवारिक स्तर में यह सम्बन्ध होता है।

कैम्पेल ने प्रस्तुत समस्या से सम्बन्धित अपना शोधकार्य सन् 1952 में प्रस्तुत

किया है। शोधकर्ता ने माध्यमिक विद्यालय के 25 बालकों के पारिवारिक वातावरण तथा गृह स्थिति का अध्ययन करके उनकी शैक्षिक प्रगति के विषय में जानने का प्रयास किया है। सर्वेक्षण विधि से शोधकर्ता ने बालकों के घर के वातावरण तथा स्थिति का ज्ञान साक्षात्कार के माध्यम से किया। बुद्धि परीक्षण के द्वारा प्राप्त शैक्षिक सम्प्राप्ति के आधार पर बालकों को मन्द औसत से मन्द तथा तीव्र इन श्रेणियों में विभक्त किया गया है। शोधकर्ता के घर के वातावरण, माता–पिता की शैक्षिक योग्यता, आय आदि कुछ निश्चित तत्व बालकों की शैक्षिक सम्प्राप्ति को पर्याप्त रूप से प्रभावित करते हैं। इस सम्बन्ध में कैम्पेल ने भी यह कहा है कि बालकों के शारीरिक तथा मानसिक विकास के लिए उनकी माता–पिता की शिक्षा तथा आय में आवश्यक बुद्धि की जानी चाहिए।

सर लिरिल बर्ट ने पिछड़े बालकों के अध्ययन के आधार पर बताया कि लगभग 38ः पिछड़े बालक सामान्य रूप से निर्धन परिवारों के होते हैं। इस प्रकार यदि हम इन आंकड़ों को सम्पूर्ण देश का प्रतिनिधि माने तो पाएंगे कि लन्दन के लगभग आधे पिछड़े बालक निर्धन परिवारों के होते हैं। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि यदा–कदा ही 10 में से एक बालक उन्नतशील परिवार से आता है।

प्रायः ऐसा देखा जाता है कि उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के बालक बुद्धि लब्धि में निम्न होते हुए भी विद्यालयी उपलब्धि में अधिक सफल रहते हैं। सामाजिक आर्थिक स्तर का विद्यालय उपलब्धि से सह–सम्बन्ध बुद्धि की अपवेक्षाकृत अधिक है। इनके साथ एक निर्धन छात्र मन्द बुद्धि का हो जाता है। इसकी निर्धनता उसके विद्यालयी कार्य में वृद्धि की अपेक्षा अधिक पीछे कर देती है।

आजकल लन्दन में कोई भी बालक प्रारम्भिक शिक्षा से वंचित नहीं है। क्योंकि उसके माता–पिता इतने निर्धन नहीं है कि उसकी शिक्षा के लिए व्यवस्था न कर सकें। निशुल्क काउन्सिल में पाए जाने वाले बालक–बालिकाओं को भी उसी प्रकार अच्छी शिक्षा मिलती है। जैसे – धनी जिलों के खर्चीले व्यक्तिगत विद्यालयों में पढ़ने वाले बालकों को मिलती है। यदि हम उन प्राकृतिक विद्यालयों को जो अपेक्षाकृत निर्धन जनपदों में हैं के उपलब्धि का स्तर जो कुछ भी थोड़ा बहुत कम है। वक केवल इसलिए कम है। क्योंकि यह विद्यालय सामान्य आवश्यकताओं को घटाने के लिए बाध्य है न कि इसलिए कि ये विद्यालय स्वेच्छा से कम उपलब्धि में संतुष्ट है। सर लिरिल बर्ट के अध्ययन का सारांश प्रस्तुत सारिणी में दिया गया है –

सारणी – 1

विभिन्न आर्थिक समूहों के सामान्य और पिछड़े बालकों का प्रतिशत							
परिवारिक परिस्थितियाँ	नियंत्रित समूह			पिछड़े बालक			परिवारिक परिस्थितियां और पिछड़े बालकों में सह सम्बन्ध
	बालक	बलिकायें	मध्य मान	बालक	बलिकायें	मध्य मान	
अत्यधिक (अ और ब)	14.0	16.2	8.4	16.1	24.7	20.4	0.30
निर्धन (स और द)	33.	34.8	22.3	37.3	39.9	38.6	0.34
समान्य (ई और य)	34.4	37.4	51.5	33.2	27.2	31.2	0.26
उत्कृष्ट (ग और घ)	13.3	16.6	17.8	11.3	8.1	9.7	0.18

सर फान्सेस बुड :–

सर फान्सेस बुड ने भी अपने अध्ययन के द्वारा बालकों के घर की आर्थिक स्थिति तथा बुद्धि–लब्धि के मध्य सह–सम्बन्ध देखने का प्रयास किया है। शोधकर्त्री ने अपने अध्ययन द्वारा यह प्रमाणित किया है कि बालकों की आर्थिक तथा सम्प्राप्ति में +.38 तथा बुद्धि–लब्धि में +.26 का सह सम्बन्ध होता है।

चार्ल्स सेगल :–

चार्ल्स सेगल ने प्रस्तुत समस्या से ससम्बन्धित एक अन्य अध्ययन सन् 1937 में

लन्दन के वार्ले रोड पर स्थित, ''जूनियर ब्वायज स्कूल'' नार्थ किस्टन, में अध्ययन करने वाले पिछड़े परिवार के 26 बालकों पर किया था। अपने अध्ययन के आधार पर सेंगल ने यह प्रमाणित किया है कि परिवार में जैसे–जैसे बच्चों की संख्या बढ़ती जाती है, वैसे–वैसे उन्हें प्राप्त सभी आवश्यक वस्तुओं का क्रमशः अभाव होता जाता है। ऐसा माता–पिता की अल्प आय बेरोजगारी तथा बढ़ते हुए परिवार के कारण होताहै। इस प्रकार से क्रमशः अभाव होता जाता है। ऐसा माता–पिता की अल्प आय बेरोजगारी तथा बढ़ते हुए परिवार के कारण होता है। इस प्रकार से क्रमशः बच्चों का शारीरिक मानसिक ह्रास स्वस्थ वातावरण के अभाव में होता जाता है।

निष्कर्ष में शोधकर्ता ने यह पुष्टि की कि बच्चों को प्राप्त वातावरण तथा उनके शारीरिक एवं मानसिक विकास में पर्याप्त घनिष्ठ सम्बन्ध होता है।

फ्रेजर :

फ्रेजर ने 1959 में 12 वर्ष की आयु के 400 बालकों के पारिवारिक वातावरण का अध्ययन किया। उसने सभी बालकों तथा अभिभावकों से घर जाकर साक्षात्कार किया और महत्वपूर्ण सूचनाएं संकलित की।

उसने बालकों के स्कूल की परीक्षा के अंक एकत्र किए और उनकी बुद्धि – लब्धि ज्ञात की उसके पश्चात् उन्होंने पर्यावरण के प्रत्येक घटक का छात्रों के विभिन्न विषयों से उपलब्धि और बुद्धि लब्धि के साह सह–सम्बन्ध ज्ञात किया।

सारणी नं. 2 में दिए गए सह सम्बन्धें से स्पष्ट होता है कि अभिभावकों के दृष्टिकोंण, आय, निवास स्थान में तीन विभिन्नता के महत्वपूर्ण कारक हैं।

माता–पिता की शिक्षा और प्रोत्साहन का बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में उच्च सह–सम्बन्ध हैं। इस अध्ययन में पिता के व्यवसाय को अध्ययन का विषय स्वीकार नहीं किया है। किन्तु बुद्धि लब्धि के प्रभावों को छोड़कर अन्य सम्बन्धित चरों विश्लेषण अवश्य किया है। प्राप्त परिणाम अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। यद्यपि बालक की बुद्धि–लब्धि और पिता के व्यवसाय में घनिष्ठ सम्बन्ध है और बालकों की विद्यालयी सफलता तथा पिता के व्यवसाय में और भी घनिष्ठ सम्बन्ध है।

उक्त व्यावसायिक पैमाने से कुछ महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त हुए। विशेषकर कर्मचारियों के लोगों में यह पाया गया कि दक्ष एवं योग्य माता–पिता के बच्चों की

बुद्धि–लब्धि अच्छी होती है। किन्तु सामूहिक रूप में वे लिपिक वर्ग की अपेक्षा कम बुद्धिमान होते हुए भी विद्यालयी जीवन में अधिक सफल होते हैं। पारिवारिक आकार के सह–सम्बन्ध भी बड़े रूचिपूर्ण हैं। यह बताता है कि बुद्धि और परिवार के आकार में ऋणात्मक सह–सम्बन्ध है तथा शैक्षधिक उपलब्धि का इससे घनिष्ठ सम्बन्ध है। अकुशल व्यावसायिक समूहों में परिवार का आकार बड़ा होता है और बड़ा परिवार होने के फलस्वरूप उनकी विद्यालय में सफलता की आशा कम होती है।

सारणी – 2

क्रमांक	घर	बुद्धि–लब्धि	क्राइटरिन	अन्तर
1.	माता–पिता का शिक्षा के प्रति दृष्टिकोंण व व्यवसाय	0.297	0.391	0.094
2.	आमदानी	0.350	0.444	0.094
3.	आवास	0.363	0.447	0.084
4.	शिक्षा	0.423	0.490	0.067
5.	घरेलू वातावरण व सामान्य प्रभाव	0.393	0.460	0.067
6.	माता–पिता द्वारा प्रोत्साहन	0.604	0.668	0.056
7.	परिवार का आकार	0.404	0.458	0.054
8.	माता–पिता द्वारा पुस्तक अध्ययन	0.280	0.329	0.059
9.	समाचार पत्र पत्रिकाओं का अध्ययन	0.381	0.398	0.017

(ब) भारत वर्ष में किया गया अध्ययन :–

छात्रों के सामाजिक आर्थिक स्तर उनकी शैक्षिक सम्प्राही एवं मानसिक विकास ससम्बन्धित कुछ शोध कार्य भारतत में गत वर्षों में हुआ है। उनमें प्रमुख निम्न हैं–

"डॉ0 आर0एल0 देवे ने 1963 में प्रस्तुत समस्या पर अध्ययन किया कि पारिवारिक

पर्यावरण शैक्षिक उपलब्धि से क्या सम्बन्ध रखता है। इसका अध्ययन 6 चरों द्वारा किया है –

1. उपलब्धि।
2. पारिवारिक भाषा
3. परिवार द्वारा दिया गया शैक्षिक निर्देशन
4. व्यापक पर्यावरण में विभिन्न पहलुओं को घर में उभारने के लिए प्रेरक।
5. घर में बौद्धिक रूझानों से सम्बन्धित क्रियाएं।
6. आदतों पर दिया गया महत्व।

उपरोक्त अध्ययन का परिणाम प्रस्तुत सारणी संख्या 3 में दिया गया है–

सारणी – 3

चर	परिवार का शैक्षिक पर्यावरण	सामाजिक स्तर	पिता का व्यवसाय	माता–पिता की शिक्षा
सह–सम्बन्ध	0.799	0.018	0.056	0.273

डॉ0 दबे के अध्ययन के अनुसार विद्यालयी उपलब्धि तथा वातावरण के अन्य कारकों तथा घटकों, उदाहरणार्थ सामाजिक आर्थिक स्तर, माता–पिता की शिक्षा, व्यवसायिक स्तर, सामाजिक स्तर का सह–सम्बन्ध (+080) है जो कि उच्च सह–सम्बन्ध से (0.05) से कम है अथवा भिन्न है।

तालिका 3 से स्पष्ट है कि विद्यालयी उपलब्धि तथा शैक्षिक पर्यावरण का सह–सम्बनध सामाजिक आर्थिक वातावरण से अधिक है।

विद्यालयी उपलब्धियों तथा सामाजिक आर्थिक स्तर का सह–सम्बन्ध 0.018 है। इसका तात्पर्य यह है कि छात्रों सामाजिक आर्थिक स्तर से विद्यालयी उपलब्धियों का सम्बन्ध अत्यन्त कम है। विद्यालयी उपलब्ध्यिों तथा माता–पिता की शिक्षा का सह –सम्बन्ध 0.273 है। यह प्रदर्शित करता है कि माता–पिता की शिक्षा का विद्यालयी उपलब्धि का सह–सम्बन्ध 056 है। तात्पर्य यह है कि माता–पिता के व्यवसाय का विद्यालयी उपलब्धि से सह–सम्बन्ध अपेक्षाकृत कम है।

डॉ0 दबे ने यह निष्कर्ष निकाला कि परिवार के शैक्षिक पर्यावरण का बालक की

विद्यालयी उपलब्धि से उच्च सह–सम्बन्ध है। जबकि सामाजिक आर्थिक स्तर का अपेक्षाकृत कम सह–सम्बन्ध है।

"सी0एस0 बनर" ने हाई स्कूल के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक आर्थिक स्तर के सम्बन्ध में अध्ययन किया।

उद्देश्य :

1. विभिन्न सामाजिक आर्थिक समूहों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर ज्ञात करना।
2. हाई स्कूल के छात्रों की शैक्ष्ज्ञिक निष्पत्ति पर सामाजिक आर्थिक स्थिति का कोई प्रभाव पड़ता है यदि है तो क्या।

प्रतिदर्श :–

शोधकर्त्री ने न्यायदर्श हेतु मैसूर राज्य के हाई स्कूल के दसवीं कक्षा के 102 बालिकाओं का चयन किया। चयन के लिए विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्थिति के परिवारों को लिया।

उपकरण :–

1. सामाजिक आर्थिक स्थिति को निर्धारित करने के लिए अनुसंधानकर्त्री ने एक परीक्षण निर्मित किया।
2. हाई स्कूल की बालिकाओं की अर्दुवार्षिक परीक्षाफल के अंकों का संग्रह किया।

उपलब्धियां :–

1. उच्च–मध्यम स्तर की बालिकाओं ने मध्यम श्रेणी के अंक प्राप्त किए।
2. निम्न–मध्यम स्तर की बालिकाओं ने सबसे कम अंक प्राप्त किए।
3. मध्यम–वर्ग की छात्राओं की निष्पत्ति सदैव मध्यम श्रेणी की रही।

श्री के0 माथुर ने माध्यमिक स्कूल कें विद्यार्थियों की निष्पत्ति ओर व्यवहार पर सामाजिक आर्थिक स्तर का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया।

उद्देश्य :–

निम्न परिकल्पनाओं के परीक्षण के लिए प्रस्तुत अध्ययन किया गया –

1. उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च होती है।
2. शैक्षिक सम्प्राप्ति विभिन्नता बौद्धिक स्तर की भिन्नता के कारण होती है।
3. निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों का शैक्षिक स्तर, उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा कम होता है।
4. बुद्धि मानव से सकारात्मक रूप मे सम्बन्धित होती है।
5. उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के बालक निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के बालकों की अपेक्षा कम आयु के होते हैं।

प्रतिदर्श :–

9वीं, 10वीं कक्षा के 500 विद्यार्थियों (309 लड़के, 191 लड़कियां) का यादुच्छिक विधि से अलीगढ़ के 7 लड़के तथा 3 लड़कियों के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों से चयन किया गया।

उपकरण : –

1. सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी शोधकर्त्री द्वारा निर्मित।
2. व्यवसाय, सामाजिक मूल्य के अनुसार पांच क्रम बिन्दु मापना।
3. शैक्षिक–व्यवसायिक निर्देशन केन्द्र बिहार का निष्पत्ति परीक्षण।
4. प्रमाणीकृत बुद्धि–परीक्षण –''मनोविज्ञान केन्द्र उत्तर प्रदेश''।
5. मैसेला की सुरक्षित – असुरक्षित मापनी सूची।
6. अध्ययन करने की आदत सूची।

उपलब्धियां :–

1. सामाजिक आर्थिक स्तर विद्यार्थियों के व्यवहार को प्रभावित करता हैं
2. सामाजिक–आर्थिक स्तर और निष्पत्ति में पाया गुणांक 70 था और बुद्धि तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर में 84 था।
3. जिन विद्यार्थियों का व्यक्तित्व उच्च माप का था उन विद्यार्थियों की बुद्धि भी उच्च मापी गयी।

4. छोटी आयु के विद्यार्थियों को सामाजिक–आर्थिक स्तर उच्च था।

5. उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की बुद्धि उच्च कोटि की थी।

6. अधिक सुरक्षित व्यक्ति अपने व्यवहार और निष्पत्ति में अधिक अच्छे पाए गए।

7. समायोजन सूची और क्रमिक व्यवहा, सुरक्षित और असुरक्षित सूची तथा बुद्धि में क्रमशः 87, 73, 89 सह–सम्बन्ध गुणांक पाया गया हैं

8. अध्ययन की आदत विद्यालयी निष्पत्ति से उच्च रूप से सह–सम्बन्धित थी।

परीक्षा ए0उव0 ने 1 ''सथानामथिल्टा'' जिले के हाई स्कूल के स्तर के छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति पर सामाजिक आर्थिक कारकों के प्रभाव का अध्ययन किया। न्यादर्श के लिए उसी जिले के हाई स्कूल के कुल 258 छात्र जिसमें (68 लड़के एवं 90 लड़कियां) चुने गए। अध्ययन का परिणाम यह पाया गया कि शैक्षिक निष्पत्ति और सामाजिक–आर्थिक स्तर में कोई सम्बन्ध नहीं होता है।

रवीन्द्र एवं फिरोज सिंह ने 1968 में 10वीं कक्षा के छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति पर सामाजिक आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन किया।

उद्देश्य :

1. 10वीं कक्षा के बालकों का सामाजिक आर्थिक स्तर ज्ञात करना।

2. छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति ज्ञात करके सामाजिक–आर्थिक स्तर और शैक्षिक निष्पत्ति में सम्बन्ध ज्ञात करना।

प्रतिदर्श :–

केरल राज्य के दसवीं कक्षा के 258 छात्रों का चयन किया गया।

उपकरण :–

1. निष्पत्ति परीक्षण।

2. सामाजिक–आर्थिक स्तर ज्ञात करने के लिए प्रश्नावली जिसमें –

(क) परिवार का शैक्षिक स्तर

(ख) परिवार की आय

(ग) माता–पिता का व्यवसाय

(घ) घर में उपलब्ध सुविधाएं तथा घर से स्कूल की दूरी आदि।

उपलब्धियां :–

1. छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति और पारिवारिक शैक्षिक स्तर में कोई सम्बन्ध नहीं पाया गया।
2. मध्य स्तर के छात्रों की निष्पत्ति बहुत श्रेष्ठ पायी गयी। माता–पिता का व्यवसायिक स्तर छात्रों की निष्पत्ति बुद्धि में सहायक एवं घर में प्राप्त सुविधाएं उत्तम निष्पत्ति के लिए प्रेरित करती हुई पायी गयीं।

माफेतिया ने 1954 में विद्यालय में बालकों के पिछड़ेपन के सम्बन्ध में अध्ययन किया। अपने अध्ययन के अनुसार शोधकर्ता ने यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया है कि यद्यपित विद्यालय में बालकों के पिछड़ेपन के कई कारण हैं। तथापि उनमें से स्वस्थ्य सामाजिक, आर्थिक स्तर के अभाव एक प्रमुख कारण है। शोधकर्ता ने यह भी विचार व्यक्त किया है कि जो बालक तीव्र बुद्धि के होते हैं। उनमें सामाजिक आर्थिक स्तर का प्रभाव नहीं पड़ता है।

अंजली बनर्जी ने प्रयोग विश्व विद्यालय के शिक्षा विभाग की एक छात्रा ने प्रस्तुत समस्या से सम्बन्धित एक लघु शोध प्रबन्ध सन् 1961 में प्रस्तुत किया शोध की समस्या थी –

''कक्षा 8 के छात्रों की सामाजिक आर्थिक स्तर का शैक्षिक सम्प्राप्ति पर प्रभाव''

यह शोध कार्य 159 छात्रों पर किया गया था। अपने सर्वेक्षण विधि द्वारा बनर्जी ने एक बुद्धि परीक्षण के माध्यम से बालकों के शैक्षिक स्तर तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर को एक प्रश्न पत्र के माध्यम से ज्ञात किया। बालको की शैक्षिक सम्प्राप्ति को विद्यालय के माध्यम से प्राप्त परीक्षा अंकों द्वारा ज्ञात करके सामाजिक आर्थिक स्तर तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति में यह सम्बन्ध स्थापित किया। प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर प्रस्तुत शोध के द्वारा इस तथ्य को प्रतिपादित किया गया कि – बालक की उन्नति में सामाजिक–आर्थिक स्तर का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है।

आर.सी. लंगर ने 1968 में एम.एड. में किए गए अपने लघु शोध प्रबन्ध में सामाजिक आर्थिक स्तर का शैक्षिक विषयों में प्राप्त निष्पत्ति पाठ्यानुगत सहगामी क्रियाओं के मध्य सम्बन्ध हेतु अध्ययन कार्य में छात्र आगरा के विभिन्न 5 विद्यालयों से चुने गए थे। सम्पूर्ण प्रतिदर्श उन्होंने 130 छात्र लिए इनकी आयु 11 वर्ष 6 माह से 14

वर्ष 5 माह के मध्य थी।

अध्ययन के आधार पर निम्न निष्कर्ष दिये :–

1. सामाजिक आर्थिक स्तर तथा शैक्षिक निष्पत्ति में महत्वपूर्ण सम्बन्ध होता है।

2. सामाजिक आर्थिक स्तर तथा छात्रा की निष्पत्ति में पिता की शिक्षा, आय, व्यवसाय तथा छात्रों की निष्पत्ति में क्रमशः 43, 31, 39 का सम्बन्ध पाया गया जो 01 सार्थक स्तर पर महत्वपूर्ण पाया गया।

3. छात्रों की विभिन्न विषयों की निष्पत्ति जैसे अंग्रेजी, विज्ञान, गणित, सामाजिक विषय का सम्बन्ध की शिक्षा के साथ महत्वपूर्ण पाया गया।

कु0 मोहनी भट्नागर ने समायोजन की समस्याओं तथा सामाजिक आर्थिक स्तर शैक्षिक निष्पत्ति एवं बुद्धि के सह–सम्बन्ध पर एक अध्ययन किया। प्रस्तुत अध्ययन के लिए उन्होंने आगरा के महाविद्यालयों से 250 स्नातक विद्यार्थियों का चयन किया। अध्ययन द्वारा प्राप्त परिणाम इस प्रकार रहा –

1. सामाजिक आर्थिक स्तर का कोई सम्बन्ध सम्पूर्ण समूह को लेने पर नहीं था। किन्तु जब समूह को उच्च सामान्य और निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के समूहों में बांटा गया तब भिन्न प्रकार के निरीक्षण प्राप्त हुए।

2. निम्न स्तर के समूहों में अच्छा समायोजन देखा गया।

सामाजिक–आर्थिक स्तर के बालक के व्यक्तित्व पर प्रभाव देखने के लिए –

1. राजस्थान विश्वविद्यालय के विद्याभवन में सन् 1953–54 में एक अप्रकाशित शोध लेख प्रस्तुत किया गया। जिसका शीर्षक "बालक के विकास पर सामाजिक आर्थिक स्तर का प्रभाव" था। शोधकर्त्री सर्वेक्षण विधि द्वारा न्यादर्श से इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि बालकों के विकास पर उसके सामाजिक आर्थिक स्तर का पर्याप्त प्रभाव पड़ता है।

2. प्रस्तुत समस्या से सम्बन्धित 1955–56 में प्रान्तीय शिक्षा महाविद्यालय जबलपुर द्वारा अन्य महत्वपूर्ण शोध प्रस्तुत किया गया। इस शोध ग्रन्थ द्वारा मध्य प्रदेश के कतिपय बालकों की सामाजिक आर्थिक स्थिति तथा बाल–अपराध पर सर्वेक्षण किया गया। सर्वेक्षण विधि द्वारा विश्लेषण के पश्चात् यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि 62% बाल

अपराधी मगन परिवारों से आए। इस प्रकार के बालकों के माता–पिता अशिक्षित एवं निम्न श्रेणी के व्यक्ति थे। इनकी सामाजिक आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। परिणामतः ऐसे परिवार के बालक अपराधी सिद्ध हुए।

3. इसी क्षेत्र में सन् 1958–59 में एक अन्य महत्वपूर्ण शोध कार्य कोयम्बटूर विद्यालय द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस शोध कार्य को भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय द्वारा अनुमोदन प्राप्त था। शोध का विषय था – **''कोयम्बटूर जिले के कक्षा 10 के छात्रों की सामाजिक आर्थिक स्थिति''**

यह एक बहुमुखी शोध कार्य था अतः इस शोध द्वारा विस्तृत अध्ययन भी किया गया। शोध द्वारा प्राप्त निष्कर्ष के अनुसार छात्रों के सामाजिक आर्थिक स्तर शैक्षिक निष्पत्ति में निम्न सह सम्बन्ध होता है। परन्तु विद्यालय के अन्य शैक्षिक वातावरण का प्रभाव छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति पर अवश्य पड़ता है।

इस प्रकार शोधकर्त्री ने सामाजिक आर्थिक स्तर का बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करने के लिए विभिन्न साहित्यों शोध पत्रिकाओं एवं शोध प्रबन्धों का अध्ययन किया। शोध पत्रिकाओं एवं शोध प्रबन्धों का अध्ययन किया उसके आधार पर यहीं निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि सामाजिक आर्थिक स्तर और शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सह–सम्बन्ध है। बालकों की शैक्षिक निष्पत्ति पर सामाजिक आर्थिक स्तर का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। कुछ शोध कार्य ऐसे हुए हैं जिनके अनुसार सामाजिक आर्थिक स्तर व शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सम्बन्ध नहीं है। किन्तु ऐसे शोध प्रबन्धों की संख्या नगण्य हैं।

तृतीय अध्याय

अध्ययन प्रक्रिया

अध्याय – 3

मानव की प्रकृति जिज्ञासा प्रधान होती है। वह अपने समक्ष आने वाले प्रश्नों का वास्तविक समाधान प्राप्त करना चाहता है। इसके लिए वह आवश्यक उपकरणों एवं उपयुक्त विधियों का प्रयोग करके अध्ययन करता है। प्रस्तुत अध्याय में शोधकर्त्री ने अध्ययन के उद्देश्य को ध्यान में राते हुए अध्ययन प्रक्रिया तथा प्रयुक्त उपकरणों आदि का वर्णन निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत किया जाता है।

अनुसंधान की विधि एवं प्रविधि :

सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण करने पर स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत समस्या के क्षेत्र में विस्तृत अध्ययन नहीं किया गया है। जो अनुसंधान कार्य किया भी गया है वह किसी क्षेत्र–विशेष तक सीमित है। इसके अतिरिक्त इन सभी अनुसंधान की विधि तथा प्रविधि को भिन्न–भिन्न रूप में स्वीकार किया है। अतः प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधान की विधि एवं प्रविधि का चयन करने मे अत्यन्त सचेष्ट रही है।

प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधाकर्त्री ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

विद्यालयों का चयन :

प्रस्तुत अनुसंधान में अनुसंधानकर्त्री ने यादृच्छिक न्यादर्श के रूप में झाँसी शहर के बरूआसागर क्षेत्र के 2 विद्यालयों –

1. लोकमान्य तिलक इण्टर कॉलेज , झॉसी।
2. लक्ष्मी व्यायाम मन्दिर इण्टर कॉलेज, झॉसी के छात्र/छात्राओं का चयन किया है।

इन विद्यालयों का चयन अनुसन्धाकर्त्री ने इसलिए किया है क्योंकि इन विद्यालयों में प्रायः भिन्न–भिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर के छात्र एवं छात्रायें अध्ययनरत हैं।

छात्र कक्षा का चयन :

प्रस्तुत अनुसन्धान के लिए माध्यमिक कक्षा के छात्र–छात्राओं का ही चयन किया गया है। अनुसन्धाकर्त्री ने कक्षा के छात्र–छात्राओं का सामाजिक आर्थिक परीक्षण द्वारा

उनका सामाजिक आर्थिक स्तर ज्ञात करने का प्रयत्न किया है। साथ ही साथ इन्हीं छात्र–छात्राओं की पिछली कक्षा की वार्षिक परीक्षा का अंक शैक्षिक निष्पत्ति के रूप में लिया गया है ऐसा करने का कारण यह था कि प्रस्तुत कक्षा से सम्बन्धित सभी विषयों पर सम्मिलित रूप में कोई निष्पत्ति परीक्षण उपलब्ध नहीं है।

छात्र–संख्या का चयन :

प्रस्तुत अध्ययन के लिए अनुसन्धाकर्त्री ने न्यादर्श के रूप में 100 छात्र–छात्राओं (50 छात्र तथा 50 छात्राओं) का चयन किया गया।

न्यादर्श का स्पष्ट विवरण विद्यालय ताकि छात्र–छात्राओं की संख्या के अनुसार निम्न है –

क्रमांक	विद्यालय का नाम	छात्र	छात्रायें	कुल
1.	लोकमान्य तिलक इण्टर कॉलेज	25	25	50
2.	लक्ष्मी व्यायाम मन्दिर इण्टर कॉलेज	25	25	50
	कुल योग	50	50	100

बिषयानुसार छात्र संख्या सामाजिक आर्थिक स्तर, प्राप्तांक तथा उनकी शैक्षिक निष्पत्ति से सम्बन्धित परीक्षा अंकों का विस्तृत विवरण परिशिष्ट नं. 1 तथा 2 में दिया गया है।

अनुसन्धान हेतु उपकरणों का चयन :

अनुसंधान में समस्या चयन के पश्चात अनुसन्धानकर्त्री के समक्ष यह समस्या आती है कि वह अपनी परिकल्पना के परीक्षण के लिए आंकड़ों का संग्रह किस विधि से करें तथा किन किन उपकरणों के द्वारा करें। क्योंकि अनुसन्धान समस्या से आरम्भ होता है तथा परिकल्पना की प्रकृति के अनुरूप ही उपकरणों का चयन भी होता है। अतः अनुसन्धानकर्त्री के लिए आवश्यक है कि उसे उपकरणों, विधियों एवं यंत्रों का समुचित ज्ञान हो। उसे यह भी ज्ञात होना चाहिए कि इन उपकरणों से किस प्रकार के आंकड़े प्राप्त होंगे। इनकी क्या विशेषतायें एवं सीमायें हैं किन अवधारणाओं पर इनका उपयोग

आधारित है तथा इनकी विश्वसनीयता तथा वैधता एवं वस्तु निष्ठता क्या है अनुसन्धान के उपकरण ऐसे होने चाहिये जो उद्देश्यपूर्ति में सफल हों।

अनुसन्धान में प्रयुक्त परीक्षण का विवरण :

छात्र–छात्राओं का सामाजिक आर्थिक स्तर मापने के लिए अनुसन्धानकर्त्री ने इस मापनी का चयन करने हेतु अनेक सामाजिक आर्थिक मापनियों का सर्वेक्षण किया और ज्ञानेन्द्र पी0 श्रीवास्तव के परीक्षण को सबसे अधिक उपयुक्त एवं सुविधापूर्ण पाया। इसलिए अनुसन्धानकर्त्री ने प्रस्तुत परीक्षण का अपने शोधकार्य के लिए चयन किया। यह परीक्षण हिन्दी भाषा में है। हिन्दी भाषा में रचित परीक्षण के प्रयोग में उद्देश्य यह था कि झांसी हिन्दी भाषी क्षेत्र है।

सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनीः

प्रस्तुत अध्ययन में छात्र–छात्राओं का सामाजिक आर्थिक स्तर ''ज्ञानेन्द्र पी0श्रीवास्तव'' द्वारा निर्मित ''प्रमाणीकृत परीक्षण'' सामाजिक आर्थिक स्तर मापनी द्वारा ज्ञात किया गया है। प्रस्तुत परीक्षण 5 भागों में विभक्त है। इस परीक्षण का पूर्णांक 44 निर्धारित किया गया है।

परीक्षण का प्रथम भाग, पिता अथवा अभिभावक की शिक्षा को प्रदर्शित करता है। जिसके 8 उपभाग किये गये हैं। ये उपभाग क्रमशः उच्च प्रशासनिक अधिकारी जैसे – प्रिंसिपल, बैंक मैनेजर, जिलाधिकारी, औद्योगिक संस्था के मैनेजिंग डायरेक्टर, फैक्ट्री मालिक आदि, द्वितीय – मध्यवर्गीय प्रशासनिक अधिकारी, तृतीय – लिपिक या तृतीय श्रेणी की नौकरी के कार्यकर्ता, चतुर्थ– साधारण कौशल का कार्य करने वाले, पंचम – क्रमिक एवं कृषि कार्य, षष्टम – घरेलू नौकर आदि, सप्तम – बेरोजगार आदि है।

परीक्षण का भाग तीन, छात्र छात्राओं के पिता अथवा संरक्षण की मासिक आय को प्रस्तुत करता है। इस भाग को 6 उपभागों में विभाजित किया गया है। प्रथम उपभाग में 1700 से अधिक आय वाले माता पिता अथवा संरक्षण, द्वितीय में 1000 से 1700 तक, तृतीय में 500 से 999 तक चतुर्थ में 200 से 499 तक पंचम में 100 से 199 तक, षष्टम में 100 से कम आदि आय वाले माता पिता को रखा गया है। इसके द्वारा यह स्पष्ट होता

है कि छात्रों के परिवार की मासिक आय कितनी है तथा किस स्तर से सम्बन्धित है।

परीक्षण का चतुर्थ भाग छात्र छात्राओं के परिवार के सांस्कृतिक स्तर से सम्बन्धित है। इसके अन्तर्गत 3 बातों पर प्रकाश डाला गया है। प्रथम में यह ज्ञात किया गया है कि छात्र छात्राओं के घर समाचार पत्र लिया जाता है या नहीं द्वितीय में यह ज्ञात किया जाता है कि उनके घर पत्र पत्रिकायें मंगाई जाती है या नहीं या कभी कभी खरीदी जाती है। तृतीय में यह ज्ञात किया जाता है कि उन्हें जेब खर्च के लिए पैसे दिये जाते हैं या नहीं। इन तीनों तथ्यों द्वारा छात्रों के परिवार के सांस्कृतिक स्तर को मापा गया है।

परीक्षण का पंचम भाग छात्र–छात्राओं में माता–पिता या संरक्षण की सामाजिक सहभागिता से सम्बन्धित है। इसमें यह ज्ञात किया गया है कि छात्र छात्राओं के माता पिता अथवा अभिभावक समाज के सामाजिक आर्थिक धार्मिक सांस्कृतिक, राजनैतिक कार्यक्रम में कहां तक भाग लेते हैं इन कार्यक्रमों में उनकी भूमिका क्या रही है इसके अन्तर्गत 2 बातों पर प्रकाश डाला गया है। प्रथम तो यह देखा गया है कि उनके माता पिता या अभिभावक किसी मनोरंजन क्लब के सदस्य है या नहीं। द्वितीयतः यह देखा गया है कि उनके माता पिता या अभिभावक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक संस्थाओं के कार्यक्रमों में भाग लेते हैं या नहीं। यदि लेते हैं तो उनकी भूमिका किस स्तर की है वे किसी संस्था के पदाधिकारी हैं या नहीं, अधिकतम रूप से वे कितनी संस्था के पदाधिकारी है या सदस्य हैं इन तथ्यों से सामाजिक सहभागिता स्तर को मापा गया है।

परीक्षण का प्रशासन :

परीक्षण के चयन के पश्चात् शोधकर्त्री पूर्व उल्लेखित विद्यालयों में जाकर वहां के प्राचार्यों से मिला तथा अपने कार्य के लिए समय तथा दिन निश्चित किया और उन्हीं दिनों एवं समय पर जाकर परीक्षण प्रशासित किया। परीक्षण भरवाने से पूर्व छात्र एवं छात्राओं को उसकी कार्य विधि समझाया गया। उन्हें यह भी आश्वासन दिया गया कि इस परीक्षण का उनके विद्यालय के कार्यों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा तथा उनकी सूचनायें गोपनीय रखी जायेंगी। छात्र छात्राओं द्वारा परीक्षण भरते समय नकल पर ध्यान दिया गया। इसका यथासम्भव प्रयास किया गया कि छात्र नकल न करें।

दत्तों का संकलन :

(क) सामाजिक–आर्थिक स्तर के परीक्षण का अंकन :

प्रस्तुत सामाजिक आर्थिक स्तर के परीक्षण का अंकन ज्ञानेन्द्र पी0 श्रीवास्तव के मैनुअल के आधार पर किया गया है। मैनुअल के अनुसार उक्त परीक्षण का पूर्णांक 44 निश्चित किया गया है। प्राप्तांकों के आधार पर सामाजिक आर्थिक स्तर को निम्न 5 भागों में वर्गीकृत किया गया है।

प्राप्तांक	श्रेणी
34 और अधिक	उच्चतम स्तर
25 से 33 तक	उच्च मध्य स्तर
16 से 24 तक	निम्न मध्य स्तर
9 से 15 तक	निम्न स्तर
8 और निम्न	निम्नतम् स्तर

सम्पूर्ण परीक्षण को प्रश्नों की दृष्टि से 8 भागों में विभाजित किया गया है। किन्तु सामाजिक आर्थिक स्तर के कारणों की दृष्टि से परीक्षण के 5 भाग किये जाते हैं। प्रश्न सं0 1 छात्रों के पिता या अभिभावक की शिक्षा प्रश्न 2 माता पिता का व्यवसाय प्रश्न 3 माता पिता की आय प्रश्न 4, 5 तथा 6 उनके परिवार का सांस्कृतिक स्तर, प्रश्न 7 तथा 8 परिवार की सामाजिक सहभागिता को व्यक्त करता है। इनका मूल्यांकन मैनुअल के आधार पर निम्नवत् किया गया है –

सारणी – 5,
(माता–पिता अथवा अभिभावक की शिक्षा)

क्रमांक	मता–पिता अथवा अभिभावक का शैक्षिक स्तर	प्राप्तांक
1.	शोध (रिसर्च) डिग्री (पी.एच.डी.,...डी.लिट,... डी.फिल)	8
2.	मेडिकल, इंजीनियरिंग आदि की टेक्निकल डिग्री या स्नातकोत्तरीय डिग्री (एम.ए., एम.कॉम., एम.एस.सी.)	7
3.	स्नातकीय शिक्षा (बी.ए., बी.कॉम., बी.एस.सी., बी.आनर्स)	6
4.	इण्टरमीडिएट (आई.ए.आई.एस.सी., आई.काम) आदि	5
5.	हाईस्कूल (मैट्रिक, हायरसेकेण्डरी, पी. यूनिवर्सिटी आदि)	4
6.	मिडिल स्कूल	2
7.	प्राइमरी या अल्प शिक्षित	1
8.	अशिक्षित या अनपढ़	0

खण्ड – 2

सारणी – 6

(माता–पिता अथवा अभिभावक का व्यावसायिक स्तर)

क्रमांक	मता–पिता अथवा अभिभावक का व्यवसायिक स्तर	प्राप्तांक
1.	उच्च प्रशासनिक अधिकारी, डॉक्टर, वकील, इन्जीनियर, बैंक के मैनेजर, आडीटर, फैक्ट्री या फर्म के मालिक आदि	10
2.	मध्यवर्गीय प्रशासनिक अधिकारी, मध्यम श्रेणी के डॉक्टर, वकील, जूनियर इन्जीनियर, हाईस्कूल इण्टरमीडिएट कॉलेज के अध्यापक आदि।	7
3.	क्लर्क, दुकान सहायक, प्राइमरी व मिडिल स्कूल के शिक्षक, गार्ड, टिकट कलेक्टर या अन्य तृतीय श्रेणी की नौकरी वाले।	5
4.	मोटर ड्राइवर, इन्जिन ड्राइवर, पेन्टर, मैकेनिक या अन्य कौशल कार्य	5
5.	चपरासी, फैक्टरी मजदूर, चलता फिरता दुकानदार, कृषि या साधारण कौशल कार्य	4
6.	मिडिल स्कूल का पहरेदार, दरबान, घरेलू नौकर, कुली आदि।	2
7.	बेरोजगार (दूसरों पर आश्रित)	1

खण्ड – 3

सारणी – 7

(पिता या अभिभावक की आय)

क्रमांक	माता–पिता अथवा अभिभावक की आय	प्राप्तांक
1.	1700 से अधिक	12
2.	100 से 1700 तक	9
3.	500 से 999 तक	5
4.	200 से 499 तक	3
5.	100 से 199 तक	2
6.	100 रू. से कम	1

खण्ड – 4

सारणी – 8 (क)

(छात्र छात्राओं के परिवार का सांस्कृतिक स्तर)

क्रमांक	क्या आपके घर में समाचार पत्र लिया जाता है	प्राप्तांक
1.	प्रतिदिन	2
2.	कभी–कभी	1
3.	कभी नहीं	0

खण्ड – 4

सारणी – 8 (ख)

(छात्र छात्राओं के परिवार का सांस्कृतिक स्तर)

क्रमांक	क्या आपके घर में पत्रिकायें ली जाती हैं	प्राप्तांक
1.	प्रति सप्ताह	3
2.	प्रति माह	2
3.	कभी–कभी	1
4.	कभी नहीं	0

खण्ड – 4

सारणी – 8 (ग)

(छात्र छात्राओं के परिवार का सांस्कृतिक स्तर)

क्रमांक	क्या आपको भोजन, जलपान के अतिरिक्त कुछ पैसे जेब खर्च के लिए मिलते हैं	प्राप्तांक
1.	हां	2
2.	नहीं	0

सारणी – 9 (क)
(पिता या अभिभावक की सामाजिक सहभागिता)

क्रमांक	क्या आपके पिता किसी क्लब में सदस्य हैं	प्राप्तांक
1.	हां	2
2.	नहीं	0

खण्ड – 4
सारणी – 9 (ख)

क्रमांक	क्या आपके पिता किसी संस्था के कार्यक्रम में भाग लेते हैं पदाधिकारी हैं या नहीं	प्राप्तांक
1.	नहीं	0
2.	किसी एक संस्था के सदस्य	1
3.	एक से अधिक संस्था के सदस्य	3
4.	किसी संस्था के पदाधिकारी	4
5.	एक से अधिक संस्था के पदाधिकारी	5

(अ) शैक्षिक निष्पत्ति :

प्रस्तुत अध्ययन में तुलनात्मक अध्ययन के लिए शोधकर्त्री ने चयन किये गये विद्यालयों के प्रधानाचार्यों से व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित किया तथा छात्रों की शैक्षिक

सम्प्राप्ति ज्ञात करने के लिए उन्हीं छात्रों की वार्षिक परीक्षा के अंकों को प्राप्त किया जिनको कि सामाजिक आर्थिक स्तर परीक्षण दिया गया था।

इस प्रकार से छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति के रूप में परीक्षा के प्राप्तांकों को ही लिया गया है।

सांख्यिकीय प्रयोग :

शोधकर्त्री ने परीक्षणें का फलांकन करने के बाद प्रस्तुत अध्ययन में अग्रलिखित सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया है –

मध्यमान :

प्रस्तुत अध्ययन में छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति का मध्यमान ज्ञात किया गया है शैक्षिक निष्पत्ति का मध्यमान ज्ञात कर विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर समूहों के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति में तुलना की गयी है। मध्यमान ज्ञात करने के लिए निम्न सूत्र का प्रयोग किया गया।

मध्यमान $M = \Sigma x/n$

जहां Σx प्राप्तांकों का योग तथ n प्राप्तांकों की कुल संख्या है।

मानक विचलन :

छात्र छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति की तुलना के लिए मानक विचलन का प्रयोग किया गया है। मानक विचलन ज्ञात करने के लिए निम्न सूत्र का प्रयोग किया गया–

मानक विचलन

$$\sigma D = \sqrt{\frac{S_1^2}{n_1} + \frac{S_2^2}{n_2}} \quad \text{जब } n_1 \text{ and } n_2 > 30$$

$$\sigma D = \sqrt{\frac{S_1^2}{n_1 - 1} + \frac{S_2^2}{n_2 - 1}} \quad \text{जब } n_1 \text{ and } n_2 \leq 30$$

जहां S_1 तथा S_2 प्रथम तथा द्वितीय प्रतिदर्श के लिए मानक विचलन तथा n_1 तथा n_2 आकार हैं।

टी परीक्षण (t - test) :

दो प्रतिदर्श मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता के लिये T - टेस्ट का प्रयोग करते हैं। टी–टेस्ट ज्ञात करने का सूत्र निम्नलिखित है –

$$t = M_1 \sim M_2 / \sigma D$$

जहां m_1, m_2 प्रथम तथा द्वितीय प्रतिदर्श के मध्यमान हैं तथा σD मानक विचलन है।

$$df = n_1 + n_2 - 2$$

जहां n_1, n_2 प्रतिदर्शों की संख्या है।

प्रयुक्त लघुशोधों में 0.01%, 0.05% सार्थकता स्तर का प्रयोग किया गया है।

चतुर्थ अध्याय

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

अध्याय – 4

प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण एवं विवेचन :

आंकड़ों के एकत्रीकरण एवं व्यवस्थापन के उपरान्त शोध उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु सांख्यिकीय संगणनाएं करनी पड़ती हैं इन गणनाओं से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या की जाती है। तदुपरान्त प्राप्त निष्कर्षों के विश्लेषण के द्वारा ही हम वैज्ञानिक निष्कर्ष पर पहुंचते हैं। विश्लेषण के अभाव में प्राप्त प्रदत्तें की कोई उपयोगिता नहीं रह जाती है। इसलिए शोध से किसी तथ्यपरक एवं निश्चित ज्ञान की प्राप्ति के लिए साामग्री का विश्लेषण एक अति आवश्य कार्य है। दूसरे शब्दों में कहें तो विभिन्न उपकरणों द्वारा संकलित तथ्य चाहे जितने भी वैध क्यों न हो यदि अव्यवस्थित है तो उनसे प्रयोजनशील तथा उपयोगी कार्य नहीं किया जा सकता है। इतः ऐसा करने से पूर्व उनको सुव्यवस्थित एवं संगठित करने की आवश्यकता होती है।

डब्ल्यू कोक के अनुसार : – "वैज्ञानिक विश्लेषण अध्ययन के तथ्यों परिणामों तथा वैज्ञानिक ज्ञान के सम्बन्ध की खोज है।"

आँकड़ों का विश्लेषण शोधकर्त्ता को एक वैज्ञानिक निष्कर्ष पर पहुंचाता है तथा परिकल्पना के परीक्षण में सहायक सिद्ध होता है। विश्लेषण के अभाव में आंकड़ों की कोई उपयोगिता नहीं है।

अतः प्रदत्तों के निम्नलिखित कार्य हैं –

1. प्रदत्तों को अर्थपूर्ण बनाना।
2. परिकल्पना का परीक्षण करना।
3. सार्थक परिणाम प्राप्त करने में सहायता प्रदान करना।
4. सामान्यीकरण या अनुमान लगाना।

परिकल्पना :–

1. छात्रों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

2. छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

3. छात्र/छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

उद्देश्य :–

1. छात्रों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।
2. छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।
3. छात्र/छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।

परिकल्पना 1 :–

छात्रों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

छात्रों के सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्राप्तांकों के माध्य तथा मानक विचलन की गणना :

ci	f	x	fx	d=(x-a)/i	fd	Fd^2
80-84	2	82	164	4	8	32
75-79	5	77	385	3	15	45
70-74	8	72	576	2	16	32
65-69	10	67	670	1	10	10
60-64	6	62	372	0	0	0
55-59	4	57	228	-1	-4	4
50-54	3	52	156	-2	-6	12
45-49	5	47	285	-3	-15	45
40-44	7	42	2944	-4	-28	112
	n=50		3130		-4	292

M = 62.6

SD = 12.07

छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों का माध्य तथा मानक विचलन की गणना –

ci	f	x	fx	d=(x-A)/i	fd	Fd^2
80-84	1	82	82	4	4	16
75-79	7	77	539	3	21	63
70-74	12	72	864	2	24	48
65-69	6	67	402	1	6	6
60-64	5	62	310	0	0	0
55-59	4	57	228	-1	-4	4
50-54	10	52	520	-2	-20	0
45-49	4	47	188	-3	-12	36
40-44	1	42	42	-4	-4	16
	n=50		3175		15	229

M = 63.5
SD = 10.59

't' परीक्षण के परिणामों का सारांश –

प्रतिदर्श	n	M	S	$D=M_1 - M2$	σD	t	सार्थकता का स्तर
सामाजिक आर्थिक स्तर	50	62.6	12.07	0.9	.81	1.11	
शैक्षिक उपलब्धि	50	63.5	10.59				

0.01% सार्थकता स्तर = 2.63
0.05% सार्थकता स्तर = 1.98

$$df = n_1 + n_2 - 2$$
$$= 50 + 50 - 2 = 98$$

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सार्थकता अन्तर हेतु 't' का परिकलित मान 1.11 हैं जो सार्थकता स्तर 0.05% सार्थकता स्तर तथा df = 98 पर 't' के सारणी मान 1.98 से कम है। अतः शोध की प्रथम शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

अतः छात्रों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

परिकल्पना 2 :–

छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्राप्तांकों का माध्य तथा मानक विचलन की गणना –

ci	f	x	fx	d=(x-A) /i	fd	Fd^2
80-84	1	82	82	4	4	16
75-79	6	77	462	3	18	54
70-74	5	72	360	2	10	20
65-69	7	67	469	1	7	7
60-64	12	62	744	0	0	0
55-59	5	57	285	-1	-5	5
50-54	8	52	416	-2	-16	32
45-49	4	47	228	-3	-12	36
40-44	2	42	84	-4	-8	32
	n=50		3130		-2	202

M = 62:5
SD = 10.03

छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों का माध्य तथा मानक विचलन की गणना :

ci	f	x	fx	d=(x-A) /i	fd	Fd^2
80-84	2	82	164	4	8	32
75-79	8	77	616	3	14	72
70-74	5	72	360	2	10	20
65-69	6	67	402	1	6	6
60-64	15	62	930	0	0	0
55-59	3	57	171	-1	-3	3
50-54	2	52	104	-2	-4	8
45-49	5	47	235	-3	-15	45
40-44	4	42	168	-4	-16	64
	n=50		3150		10	250

M = 63
SD = 11.13

टी0 परीक्षणों के परिणामों का सारांश –

प्रतिदर्श	n	M	S	D= M_1 ~M2	σD	t	सार्थकता का स्तर
सामाजिक आर्थिक स्तर	50	62.6	10.03				
शैक्षिक उपलब्धि	50	63	11.13	0.5	2.11	.236	

0.01% सार्थकता स्तर = 2.63
0.05% सार्थकता स्तर = 1.98

df = n_1 + n2 – 2
= 50 + 50 – 2 = 98

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सार्थकता अन्तर हेतु 't' का परिकलित मान .236 हैं जो सार्थकता स्तर 0.05 % सार्थकता स्तर **1.98** तथा df=98 पर 't' के सारणी मान 1.98 से कम है। अतः शोध की द्वितीय परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

अतः छात्रों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

परिकल्पना 3 :–

छात्र–छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्राप्तांकों का माध्य तथा मानक विचलन की गणना –

ci	f	x	fx	d=(x-A) /i	fd	Fd^2
80-84	3	82	246	4	12	48
75-79	11	77	847	3	33	99
70-74	13	72	936	2	26	52
65-69	17	67	1139	1	17	17
60-64	18	62	1116	0	0	0
55-59	9	57	513	-1	-9	-9
50-54	11	52	572	-2	-22	44
45-49	9	47	423	-3	-27	81
40-44	9	42	378	-4	-36	144
	n=100		5770		-6	494

M = 57.7 SD = 11.10

छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों का माध्य तथा मानक विचलन की गणना –

ci	f	x	fx	d=(x-a)/i	fd	Fd²
80-84	3	82	246	4	12	48
75-79	15	77	1155	3	45	135
70-74	17	72	1224	2	34	68
65-69	12	67	804	1	12	12
60-64	20	62	1240	0	0	0
55-59	7	57	399	-1	-7	7
50-54	12	52	624	-2	-24	48
45-49	9	47	423	-3	-27	81
40-44	5	42	210	-4	-20	80
	n=50		6325		25	435

M = 63.25
SD = 10.34

टी0 परीक्षण के परिणामों का सारांश –

प्रतिदर्श	n	M	S	D= $M_1 \sim M2$	σD	t	सार्थकता का स्तर
सामाजिक आर्थिक स्तर	100	57.7	11.10	5.55	1.51	3.67	
शैक्षिक उपलब्धि	100	63.25	10.34				

$$df = n_1 + n_2 - 2$$
$$= 100 + 100 - 2 = 198$$

0.01% सार्थकता स्तर = 2.60
0.05% सार्थकता स्तर = 1.97

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सार्थकता अन्तर हेतु t का परिकलित मान 3.67 हैं जो सार्थकता स्तर 0.01 % तथा df = 198 पर t के सारणी मान 2.60 से अधिक है। अतः शोध की तीसरी परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

अतः छात्रों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

पंचम अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय – 5

निष्कर्ष :

शैक्षिक अनुसंधानकर्त्ता को अपने प्रदत्तों के आधार पर निष्कर्षों का निरूपण तथा सामान्य नियमों का निर्धारण करते इस समय पूर्ण सावधानी एवं सर्तकता रखने की आवश्यकता होती है। परिणामों की व्याख्या के समान ही निष्कर्ष एवं सामान्य नियमों के निरूपण के समय भी सूक्ष्म निरूपण, विस्तृत दृष्टिकोंण तथा तर्कसंगत चिन्तनशीलता की आवश्यकता होती है। किसी भी अनुसंधान कार्य का निष्कर्ष निर्धारित तथ्यों एवं प्रकृति के नियमों के अनुकूल होना चाहिये।

उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर ही अनुसंधानकर्त्ता द्वारा प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण एवं व्याख्या के आधार पर ही उचित निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

प्राप्त प्रदत्तें के विश्लेषण एवं व्याख्या के आधार पर निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुये हैं–

1. छात्र–छात्राओं के सामाजिक आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव पड़ता है।
2. अध्ययन से यह पाया गया कि उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर वाले छात्र–छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति उच्च, मध्य, निम्न मध्य, निम्नतम सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले छात्र–छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति से अद्वितीय अधिक होती है।
3. माता–पिता की उच्च शिक्षा का बालक के शैक्षिक निष्पत्ति पर भी प्रभाव पड़ता है।
4. अभिभावक के व्यवसाय, बच्चों की शैक्षिक निष्पत्ति प्रभावित करती है।
5. माता–पिता की आय का बच्चों की शैक्षिक निष्पत्ति पर भी प्रभाव पड़ता है।
6. उच्च आय वाले माता–पिता के बच्चों की शैक्षिक निष्पत्ति औसत तथा निम्न आय वाले माता–पिता के बच्चों की शैक्षिक निष्पत्ति की अपेक्षा अधिक अच्छी होती है।
7. उच्च सांस्कृतिक स्तर वाले परिवार के बच्चों की शैक्षिक निष्पत्ति, सामान्य

तथा निम्न सांस्कृतिक स्तर वाले परिवार के बच्चों की अपेक्षा अधिक होती है। इस प्रकार स्पष्ट है कि परिवार का सांस्कृतिक स्तर बच्चों की शैक्षिक निष्पत्ति को प्रभावित करता है।

8. परिवार की सामाजिक सहभागिता का बच्चों की शैक्षिक निष्पत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

सुझाव :

वर्तमान अनुसंधान के क्षेत्र में आगामी अध्ययन हेतु प्रस्तुत किये गये सुझाव एवं सांस्कृतियां निम्नलिखित हैं

1. प्रस्तुत अध्ययन के क्षेत्र में विस्तृत तथा भिन्न–भिन्न परीक्षण एवं अनुसूची के आधार पर विस्तृत क्षेत्रों में पुनः अनुसंधान किया जाना चाहिये। जिसे इस शोध प्रबन्ध के फलों की प्रमाणिकता का परीक्षण किया जा सके।
2. प्रस्तुत अनुसंधान स्नातक के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर तथा उनकी शैक्षिक निष्पत्ति के ऊपर ही किया गया है। इसी प्रकार के अन्य अनुसंधान कार्य विश्वविद्यालय स्तर के छात्रों पर भी उनका सामाजिक–आर्थिक तथा शैक्षिक निष्पत्ति के ऊपर किये जा सकते हैं।
3. इसी प्रकार का अनुसंधान छात्राओं पर भी किया जाना चाहिये।
4. विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले ग्रामीण तथा शहरी छात्र–छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति का एक तुलनातम्क अध्ययन आवश्यक है।
5. परम्परावादी विचारधारा वाले माता–पिता तथा आधुनिक विचारधाराओं वाले माता–पिता के बच्चों की शैक्षिक निष्पत्ति में एक तुलनातम्क अध्ययन आवश्यक है।
6. प्रस्तुत अनुसंधान के अन्तर्गत छात्रों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का अध्ययन उनकी शैक्षिक निष्पत्ति के परिवेश में ही किया गया है। पुनः अनुसंधान दात्रों के अनुशासन, व्यक्तित्व एवं प्रकृति के सन्दर्भ में भी किया जाना चाहिये।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

पुस्तकें :

(11)

क्र.	लेखक	पुस्तक
1.	अग्रवाल, रामनारायण	मनोविज्ञान व शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन वि0प्र0म0, आगरा, वर्ष 1993
2.	गैरेट, एच0ई0	शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी का प्रयोग, कल्याणी प्रकाशन, राजेन्द्रनगर, लुधियाना वर्ष 1995
3.	गैरा, सुखलाल	विज्ञान शिक्षण के आधार, न्यू पब्लिक हाउस, कानपुर 2002
4.	गुप्त, रामबाबू	शिक्षण कला, न्यू पब्लिक हाउस कानपुर, वर्ष 2004
5.	चौरसिया, एम0लाल	कक्षा शिक्षण में सहाय सामग्री वि0म0प्र0, आगरा वर्ष 2002
6.	सुखिया एम0पी0, मेहरोत्रा	शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व पी0बी0 एवं मेहरोत्रा, आर0एन0वि0प्र0म0, आगरा वर्ष 2005
7.	डॉ0 कपिल एच0के0	सांख्यिकी के मूल तत्व
8.	शुक्ला एन0एन0	जनरल ऑफ वोकेशनल एण्ड एजूकेशनल गाइडेन्स, वोल्यूम 5
9.	वैल्थमैन एल0	नेशनल सोसायटी फॉर द स्टडी ऑफ एजूकेशन प्रथम भाग पृष्ठ संख्या 25, 26
10.	एनैस्टेसी, एनै0 (1961)	मनोवैज्ञानिक परीक्षक "न्यूयार्क मैकमिलन एण्ड कम्पनी लन्दन"
11.	कैप्टिन, रैयर्स एण्ड एच गर्ग	"एजूकेशनल मेजरमेण्ट एण्ड इवोल्यूशन" अध्याय 7 पृ.सं. 108
12.	लोक्गिर, जे0	"हायर बुक ऑफ द नेशनल सोसायटी फॉर द स्टडी ऑफ एजूकेशन" अध्याय 39 पृ.सं. 33
13.	डॉ0 कपिल एच.के.	संख्यिकी के मूल तत्व
14.	शुक्ला एन.एन. 1958	"जनरल ऑफ वोकेशनल एण्ड एजूकेशनल गाइडेन्स" वोल्यूम 5
15.	शर्मा, दिवाकर	मानव बुन्देलखण्ड का सामाजिक आर्थिक जीवन वर्ष–6 अंक 2 अप्रैल जून 1978 पवन ग्राफिक्स एण्ड फोड कल्चर सोसायटी लखनऊ
16.	बनर्जी, अंजली	"कक्षा आठ के छात्रों की सामाजिक आर्थिक स्थिति का शैक्षिक निष्पत्ति सम्प्राप्ति पर प्रभाव" बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग द्वारा प्रस्तुत शोध ग्रन्थ सन् 1962

परिशिष्ट 1 :

क्र.	छात्र का नाम	सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्राप्तांकों का प्रतिशत	शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांक
1	आदित्य पांडे	83	84
2	दीपक शर्मा	81	78.5
3	मिथलेश निरंजन	79	77.7
4	शिवम पुरोहित	78.7	76.4
5	आकाश नामदेव	78.5	76.3
6	पराग बकना	78.3	76
7	संजय राय	75.5	75.8
8	दिलीप शर्मा	74.3	75.3
9	संतोष साहू	74	74
10	अरूण साहू	74.3	73.8
11	राजकुमार सेन	72	73.5
12	शुवम मिश्रा	71	73
13	कपिल गुप्ता	70.5	72.8
14	ऋषि तिवारी	70.4	72.3
15	राहुल सिंह	70	72
16	आशुतोष सेन	69	71.8
17	मनीष रावत	68.9	71.2
18	सुदीप पटैरिया	68.3	71
19	अंकित मिश्रा	68	70.8
20	रामजी यादव	67.5	70.3
21	सुनील पाल	67.3	69
22	विष्णु भार्गव	67	68.7
23	केशव पाल	66.8	68
24	सौरभ कुमार	66.3	67.5
25	विशाल तोमर	65.2	66.3
26	अंकुर खरे	64.0	65
27	धनीराम साहू	64.0	64
28	कमलेश नामदेव	63.9	63.8
29	याकूब खान	62.8	63.2
30	मनोज प्रजापति	62.2	62
31	विनोद यादव	60	61
32	शैलेन्द्र रायकवार	58.9	59

33	आज्ञाराम यादव	58	50.8
34	सचिन यादव	57.3	58.3
35	विपेन्द्र अग्रवाल	55	57.8
36	आशीष गौर	54	54
37	अरविन्द	53.8	54
38	राहुल यादव	50	53
39	आकाश अग्रवाल	49	53.2
40	धर्मेन्द्र कुमार	48	53
41	महेन्द्र साहू	47.8	52.8
42	देवेन्द्र कुमार	47.6	52.5
43	सन्तोष कुमार	47.3	52.0
44	प्रदीप रिछारिया	44	51.8
45	राकेश सोनी	43.8	50.2
46	हेमन्त कुमार	43.3	49.0
47	शिवाजी बिरथरे	42.8	49.0
48	निक्की पटैरिया	42	48.8
49	प्रियम सोनी	41	47.3
50	सत्यम झा	40.3	43.8

परिशिष्ट 2 :

क्र.	छात्रा का नाम	सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्राप्तांकों का प्रतिशत	शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांक
1	वसुन्धरा शर्मा	81.8	83.5
2	पूजा जैन	78.8	81.0
3	अल्पना साहू	78.0	78.8
4	नीतू ज्योतिषी	77.3	77.6
5	आकांक्षा श्रीवास्तव	76	77.0
6	दिव्यांजली तिवारी	75.3	77.0
7	स्वप्निल दुबे	73.8	76.9
8	सरिता वर्मा	73.0	76.8
9	मोनिका नामदेव	72.0	76.0
10	मनु कटारे	71.0	75.3

11	कुमकुम वैद्य	70.5	73.8
12	सृष्टि रिछारिया	68.9	73.0
13	निशी अग्रवाल	68.2	72.0
14	अनुजा पारोलकर	68	71.0
15	नमिता पुरोहित	67.3	70.3
16	श्वेता जैन	66.0	68.3
17	रचिता जैन	65.8	68.3
18	मीनू पुरोहित	65.3	68.0
19	सोनाली सोनी	64	67
20	छवि पुरोहित	63.6	66.8
21	शिवानी पुरोहित	63.5	66.3
22	आयूषी जैन	63	65
23	प्राची	62.7	64
24	सोनाली गुप्ता	62.3	63.8
25	सुरभि जैन	62	63.5
26	हनि रेजा	61.8	63.3
27	सौम्या जैन	61.2	63.2
28	रंजना यादव	61	63.0
29	दीपाली अग्रवाल	60.5	62.8
30	शेफाली जैन	60.2	62.3
31	अनु अग्रवाल	58.7	62
32	रितु व्यास	57	61.8
33	नीतू यादव	55	61.5
34	प्रियंका साहू	54.8	61.2
35	रचना अग्रवाल	54	61
36	मनु दुबे	53.8	60.8
37	तनु दुबे	53.3	60
38	प्रतीक्षा सक्सेना	52.8	58
39	प्रियंका मिश्रा	52	57
40	सारिका अग्रवाल	51.8	56.3
41	सरोज नामदेव	51.2	54
42	अभिलाषा यादव	51	51
43	सुरभि पटैरिया	50.3	49
44	निरंजना यादव	48.3	48.8
45	रचना जैन	48	48
46	सीमा चौरसिया	47.3	47
47	भानू अग्रवाल	46	46.3
48	सुनीता पटैरिया	44	44
49	मीरा राय	43.2	43.8
50	शिवानी झा	50	42

Consumable Booklet
of

S E S S
(Urban)

GYANENDRA P. SHRIVASTAVA

T.M. No. 458715

कृपया निम्न सूचनाएं दीजिए –

नाम आयु यौन

कक्षा विभाग अनुक्रमांक

स्कूल / कॉलेज

घर का पता दिनांक

निर्देश

इस प्रश्नावली में प्रत्येक प्रश्न के कई सम्भावित उत्तर दिए गए हैं जिनमें से केवल एक उत्तर को चुनकर आप उसके वाले चौकोर घेरे (☐) में गुणा का चिन्ह (X) लगा दें। यदि पिता न हों तो अपने अभिभावक या संरक्षक (guardian) लगा दें।

1. आपके पिता ने कहां तक शिक्षा प्राप्त की है? (उत्तीर्ण परीक्षा के आधार पर उत्तर दें)

[a] शोध (रिसर्च) डिग्री (Ph.D., D.Phil., D.Litt. आदि) ☐

[b] मेडिकल, इंजीनियरिंग आदि की टैक्नीकल डिग्री या स्नातकोत्तरीय डिग्री (M.A., M.Sc., M.Com आदि) ☐

[c] स्नातकीय शिक्षा (B.A., B.Sc., B.Com आदि) ☐

[d] इण्टरमीडिएट शिक्षा (I.A., I.Sc., I.Com. आदि) ☐

[e] हाई स्कूल (Metric, Higher Secondary, Pre-University आदि) ☐

[f] मिडिल स्कूल ☐

[g] प्राइमरी या अल्पशिक्षित ☐

[h] अशिक्षित या अनपढ़ ☐

2. आपके पिता का व्यवसाय या पेशा क्या है?

[a] उच्च प्राशासनिक (गजेस्टेड) अधिकारी, लेक्चरर, रीडर, प्रोफेसर, प्रिंसीपल, डॉक्टर, वकील, इंजीनियर, समाचार–पत्र के सम्पादक, ऑडीटर, बैंक मैनेजर, विशिष्टता प्राप्त कलाकार, औद्योगिक या व्यावसायिक संस्था के मैनेजिंग डायरेक्टर, किसी फैक्टरी या फर्म के मालिक, अवैतनिक उच्च पदाधिकारी, वैज्ञानिक,राजनैतिक नेता (M.L.A., M.L.C. आदि) ☐

[b] मध्यवर्गीय प्रशासनिक (नॉन गजेस्टेड) अधिकारी, मध्य श्रेणी के वकील या डॉक्टर, हाई स्कूल या इंटरमीडिएट कॉलेज के अध्यापक, रिसर्च असिस्टेण्ट, प्रयोगशाला प्रदर्शक, कैमिस्ट, जूनियर इंजीनियर, कमीशन एजेन्ट, कलाकार, थोक विक्रेता या बड़े दुकानदार। ☐

[c] क्लर्क, टाइपिस्ट, एकाउण्टेन्ट, लेबोरेटरी असिस्टेण्ट, लेबोरेटरी टेक्नीशियन, प्राइमरी या मिडिल स्कूल के शिक्षक, स्टेशन मास्टर, गार्ड, टिकट–कलेक्टर, टी.टी., संवाददाता, दुकान–सहायक (सैल्स–मैन) या छोटे दुकानदार, टेलीफोन या टेलीग्राफ ऑपरेटर, प्रूफ रीडर, किसी फैक्टरी या खान के सुपरवाइजर, ड्राफ्टमैन या अन्य सरकारी तृतीय श्रेणी की नौकी। ☐

[d] मोटर–ड्राइवर, इंजन–ड्राइवर, पेण्टर, कम्पोजीटर, मैकेनिक, निपुण बढ़ई या राजमिस्त्री तथा अन्य कौशल के कार्य। ☐

[e] कार्यालय का सेवक (चपरासी) पिउन या अन्य चतुर्थ श्रेणी की नौकरी, फैक्टरी का मजदूर, खेमचा वाले या चलता–फिरता दुकानदार, खलासी, कृषि–कार्य या अन्य मामूली कौशल के कार्य। ☐

[f] पहरेदार, दरवान, घरेलू नौकर, कुली आदि। ☐

[g] बेरोजगार–दूसरों पर आश्रित ☐

3. आपके पिता की आय(कुल आमदनी) प्रतिमाह कितनी है?
(अन्य स्रोतों से प्राप्त आय को भी सम्मिलित करें)

[a] 1700 रू0 से अधिक ☐
[b] 1000 रू0 से 1700 रू0 ☐
[c] 500 रू0 से 999 रू0 ☐
[d] 200 रू0 से 499 रू0 ☐
[e] 100 रू0 से 199 रू0 ☐
[f] 100 रू0 से कम ☐

4. क्या आपके घर में अखवार (समाचार पत्र) लिया जाता है?

[a] प्रतिदिन ☐
[b] कभी–कभी ☐
[c] कभी नहीं ☐

5. क्या आपके घर में पत्रिकाएं (मैगजीन्स) ली जाती हैं? यदि प्रति सप्ताह और प्रतिमाह दोनों लागू हों तो प्रति सप्ताह का ही उल्लेख करें।

[a] प्रति सप्ताह ☐
[b] प्रति माह ☐
[c] कभी–कभी ☐
[d] कभी नहीं ☐

6. क्या आपको भोजन, जलपान के अतिरिक्त प्रति माह कुछ जेब खर्च के लिये मिलते हैं?

[a] हाँ ☐
[b] नहीं ☐

7. क्या आपके पिता किसी क्लब (जहां संध्या में मनोरंजन का आयोजन होता है) के सदस्य हैं?

[a] हाँ ☐
[b] नहीं ☐

8. क्या आपके पिता किसी सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक या धार्मिक संस्था के कार्यक्रम में भाग लेते हैं? यदि किसी संस्था के सदस्य हों और किसी संस्था के पदाधिकारी (प्रेसीडेन्ट, सेकेटरी आदि) हों तो पदाधिकारी का ही उल्लेख करें।

[a] नहीं ☐
[b] किसी एक संस्था के सदस्य ☐
[c] एक से अधिक संस्था के सदस्य ☐
[d] क़िसी एक संस्था के पदाधिकारी ☐
[e] एक से अधिक संस्था के पदाधिकारी

SESS Class

Total Score

समर्पण

"माता पिता एवं गुरुजनों को
सादर समर्पित"